



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

युवाओं के 'नेतृत्व कौशल' विकास में एन.सी.सी. का योगदान : एक विश्लेषण

डॉ (कैप्टन) विकास कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर एवं ए.एन.ओ.
एस.जे.के कॉलेज, कलानौर
एम. डी. यू., (रोहतक)

महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस जिस संगठन के कैडेट के रूप में सदस्य रहे हों, उस संगठन का अपने सदस्यों के 'नेतृत्व कौशल' विकास में कितना बड़ा योगदान रहता है, इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। सर्वविदित है कि हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी एन.सी. सी कैडेट रह चुके हैं। वर्तमान रक्षा मंत्री माननीय राजनाथ सिंह, पूर्व सेना प्रमुख जनरल टी.एन.रैना, पद्म भूषण, पूर्व सेना प्रमुख जनरल वी.के.सिंह, मार्शल ऑफ़ द इंडियन एयरफोर्स अर्जुन सिंह, भारत की प्रथम महिला पूर्व आई.पी.एस. श्रीमती किरण बेदी, प्रख्यात हृदय चिकित्सक डॉ नरेश त्रेहान, सुप्रसिद्ध अभिनेता श्री अनुपम खेर आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति भी एन.सी.सी कैडेट रहे हैं।¹ इन सभी उदाहरणों से इस आलेख को प्रारंभ करने का उद्देश्य केवल यही इंगित करना है कि एन.सी.सी (राष्ट्रीय कैडेट कोर) नामक इस संगठन की अंतर्निहित प्रकृति ही इस प्रकार की है कि यह अपने प्रशिक्षुओं को 'नेतृत्व कौशल', साहस, अनुशासन, राष्ट्र प्रेम आदि उदात्त जीवन मूल्यों के स्वाभाविक विकास का अवसर प्रदान करता है और उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता करता है।

युवाओं के 'नेतृत्व कौशल' विकास में एन.सी.सी. की भूमिका की चर्चा करने से पहले एक संगठन के रूप में एनसीसी की स्थापना और उसके उद्देश्यों को भी संक्षेप में जान लेना उचित रहेगा। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों ने यूनिवर्सिटी कोर (University Corps) नाम से इस संगठन को खड़ा किया और उनका उद्देश्य प्रशिक्षित युवाओं की एक फौज को द्वितीयक सुरक्षा पंक्ति के रूप में तैयार करना था। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात संसद के अधिनियम 31 के तहत 15 जुलाई 1948 को इस संगठन का औपचारिक प्रारंभ हुआ। एक साल बाद जुलाई 1949 में गर्ल्स डिवीजन का आरंभ हुआ। अप्रैल 1950 में एनसीसी एयर विंग और जुलाई 1952 में नेवल विंग की स्थापना हुई। अंग्रेज सरकार द्वारा ब्रिटिश फौज में भर्ती के मुख्य उद्देश्य से खड़े किए गए एनसीसी संगठन में आजादी के बाद अनेक परिवर्तन हुए और 1988 ई. में देश की नवीन सामाजिक आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रमुख आवश्यकता मानते हुए इसके उद्देश्यों को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया –

1. संगठित, प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं का एक मानव-संसाधन तैयार करना जो जीवन के हर क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान कर सकें और हर समय राष्ट्र की सेवा के लिए उपलब्ध रह सकें।
2. युवाओं को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना जिससे वे स्व:प्रेरित होकर सशस्त्र सेनाओं में अपना करियर चुन सकें।
3. देश के युवाओं में चरित्र, कॉमरेडशिप, अनुशासन, पंथनिरपेक्षता, साहस, स्वयं-सेवा की भावना को विकसित करना।

वर्तमान में एनसीसी के सदस्यों की संख्या लगभग 13 लाख है और यह विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है।² सार रूप में एनसीसी के बुनियादी मूल्य (Core values)³ इस प्रकार हैं -

1. कैडेट्स में देश भक्ति की भावना का विकास करना ताकि वे देश के विकास में योगदान दे सकें।
2. राष्ट्रीय व सामाजिक एकता का महत्वपूर्ण उपकरण बनना।
3. भारत के संविधान में निहित मूल्यों के प्रति सच्ची निष्ठा रखना।
4. अधिकारों का पक्षपात रहित होकर प्रयोग करना।
5. सामुदायिक और सामाजिक कार्यों में सहभागिता करना।
6. एक स्वस्थ जीवन शैली को अपनाना।
7. आर्थिक व सामाजिक रूप से वंचित नागरिकों के प्रति संवेदनशीलता रखना।
8. सयंम और स्वजागरूकता का विकास करना।
9. ईमानदारी, सत्य निष्ठा, त्याग और परिश्रम की महत्ता को समझना।
10. ज्ञान, बुद्धिमत्ता और विचारों का सम्मान।

1980 ई. में इस संगठन के आदर्श वाक्य (Moto) को अंतिम रूप से परिभाषित किया गया था और यह है – एकता और अनुशासन (Unity and Discipline)⁴

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी) का संक्षिप्त इतिहास और उद्देश्य, मूलभूत सिद्धांतों और आदर्श वाक्य आदि को समझने के पश्चात इस बात का विश्लेषण करते हैं कि एनसीसी किस प्रकार से युवा कैडेट्स के विकास में अपना योगदान देती है। ऐसे कौन से तरीके हैं जिनकी मदद से यह संगठन युवाओं को अपने व्यक्तित्व के बाह्य व आंतरिक पहलुओं को निखारने में सहायता देता है और उनमें नेतृत्व कौशल का विकास करता है ? यह मुख्यतः निम्नलिखित प्रकार से होता है -

1. कवायद (ड्रिल)
2. प्रशिक्षण शिविरों में कैडेट्स का आपसी व्यवहार व परस्पर प्रभाव।
3. विभिन्न प्रतियोगिताएँ विशेषतः सार्वजनिक वक्तव्य, समूह चर्चा, वाद-विवाद आदि।
4. खेल व रोमांचक गतिविधियाँ।

नेतृत्व कौशल विकास के लिए उपरिखित सभी तरीकों का विस्तार से अध्ययन करने से पहले व्यक्तित्व विकास के लिए विश्व की बेस्ट सेलर पुस्तकों में शामिल व शिव खेड़ा द्वारा रचित पुस्तक 'You can win' (हिंदी अनुवाद - जीत आपकी) का उल्लेख करना उचित जान पड़ता है जिन्होंने अपनी इस पुस्तक के कई अध्याय सकारात्मक नजरिए को विकसित करने की महत्ता बताने में लगाए हैं।⁵ महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सकारात्मक नजरिए का विकास एनसीसी के लक्ष्यों में स्वाभाविक रूप में विद्यमान है। एनसीसी के व्यक्तित्व विकास संबंधी पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ही कैडेट्स के व्यक्तित्व को इस प्रकार से विकसित करना है कि वे लक्षित समूह को अपने प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने की भावना विकसित करें जिसका सामान्य अर्थ यही कि हर कैडेट अपने में ऐसी नेतृत्व क्षमता विकसित करे जो दूसरो को प्रेरणा दे सके।

श्रीमद् भगवद् गीता के अद्भुत ज्ञान को त्रिभाषी संकलन में प्रस्तुत करने वाले विद्वान डॉ मनोहर अभय लिखते हैं कि “.... अनेक शोधार्थी गीता में.... नेतृत्व के महामंत्र ढूँढ रहे हैं।⁶ एक संगठन के रूप में एन.सी.सी. बेहद प्रभावशाली रूप में नेतृत्व के गुण कैडेट्स में विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। अब हम एनसीसी द्वारा नेतृत्व कौशल विकास के लिए उपलब्ध कराए जाने वाले विभिन्न माध्यमों का क्रमिक विश्लेषण करते हैं -

1. ड्रिल

सामान्यतः ड्रिल वह गतिविधि होती है जिससे हर कैडेट को कमाधिक भय लगता है लेकिन वास्तव में अनुशासन की पराकाष्ठा, नेतृत्व की असाधारणता, उत्साह की तीव्रतम जागृतता, टीम-भावना की सुंदरता और सहनशीलता की कठिनतम परीक्षा अगर देखनी हो तो ड्रिल से बेहतर माध्यम शायद कोई और नहीं हो सकता। डॉ मनोहर अभय गीता के त्रिभाषी संकलन में गीता की शिक्षा बताते हैं कि - अनुत्साहित व्यक्ति को उत्साहित करने के लिए मर्मभेदी शब्दों का प्रयोग किया करना चाहिए। दृष्टव्य है -

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप।⁷

एनसीसी में यह कार्य ड्रिल उस्ताद द्वारा किया जाता है। ड्रिल उस्ताद की कमांड सुनते ही कैडेट चाहे कितना ही थका क्यों न हो, चाहे कितना ही पसीने से तर-बतर क्यों न हो, चाहे कितना ही भूखा प्यासा क्यों न हो, दिल-दिमाग और हरकत से केवल उस्ताद की कमांड का अनुसरण करने का प्रयास करता है। अनुशासन और आज्ञाकारिता का इससे शानदार नमूना दूसरा क्या हो सकता है? ड्रिल की कमांड और कंट्रोल सीखे कैडेट के लिए नेतृत्व क्षमता नैसर्गिक गुण जैसी प्रतीत होती है। अच्छी तरह से जंची हुई पूर्ण यूनिफॉर्म में, मिलकर एक साथ देश पर मर-मिटने के जज्बे की धुनों के साथ कवायद करते कैडेट्स के समूह को देखना अपने आप में किसी अलौकिक आनंद से कम नहीं है जो एक सामान्य व्यक्ति के रौंगटे खड़े कर उसे दाँतो तले उंगली दबा लेने को बाध्य कर देता है। ड्रिल का तो मूल सिद्धान्त ही उत्साह, स्थिरता, धैर्य, सहनशीलता और टीम वर्क या समूह-कार्य है।

उपरिखित समस्त विश्लेषण इस सच्चाई को पुष्ट करता है कि ड्रिल नेतृत्व कौशल के विभिन्न आयामों यथा अनुशासन, समूह-कार्य, सहनशीलता, धैर्य, उत्साह, साहस, दबाव सहने की क्षमता आदि को निश्चित रूप से विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है।

2. विभिन्न प्रशिक्षण शिविर

एन.सी.सी. के विभिन्न प्रशिक्षण शिविर अलग-अलग जाति, धर्म, वर्ग, संस्कृति और स्थान के युवाओं को पास लाने का, परस्पर व्यवहार करने का, विभिन्न संस्कृतियों को जानने-समझने का, भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों से व्यवहार करने का अवसर प्रदान करते हैं और यह प्रक्रिया उनमें अंतःव्यक्तिक संबंधों (Interpersonal Relationship) को विकसित करने में मदद करती है। बंधुत्व, समूह-भावना और कामरेडशिप की भावना बढ़ाती है, अपने से बिल्कुल अलग प्रकार के व्यक्तियों के साथ संवेदना रखना और सामंजस्य बैठाना सिखाती है। विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में कैडेट्स को नाना प्रकार के दायित्व यथा कंपनी सीनियर, कैम्प सीनियर आदि दिए जाते हैं जो उनमें नेतृत्व कौशल का विकास करने में मदद करते हैं। अतः इसमें भी किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं है कि एन.सी.सी. के प्रशिक्षण शिविर कैडेट्स के व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को परिष्कृत और परिवर्द्धित करने का कार्य करते हैं जिनमें नेतृत्व कौशल भी स्वभावतः विद्यमान है।

3. विभिन्न प्रतियोगिताएँ

एन.सी.सी. के प्रशिक्षण के दौरान समूह चर्चा (GD), पब्लिक स्पीकिंग, मंच संचालन संबंधी प्रतियोगिताएं न केवल कैडेट्स को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करती हैं अपितु उनके संचार कौशल (Communication Skills) को भी निखारती हैं जोकि नेतृत्व क्षमता का एक आवश्यक गुण है। यही नहीं, ये प्रतियोगिताएँ उन कैडेट्स की विश्लेषणात्मक क्षमता (Critical Thinking) और रचनात्मक क्षमता (Creative Thinking) को विकसित करने का भी सशक्त माध्यम बनती है। इसी प्रकार ड्रिल, फायरिंग, ओ०टी० (Obstacle Training) आदि प्रतियोगिताएं कैडेट्स के व्यक्तित्व में साहस, नेतृत्व, एकाग्रता, कर्मठता, वस्तुनिष्ठता (Objectivity) दृढ़ता आदि गुणों को सहज रूप से विकसित करती हैं।

4. खेल व रोमांचक गतिविधियाँ

सर्वविदित है कि तन-मन को स्वस्थ व प्रसन्न रखने का सामान्यतः सबसे सरल माध्यम खेल हैं। एन.सी.सी. अपने कैडेट्स के लिए पर्वतारोहण (Mountaineering), “नौकायन (Sailing). पेरासेलिंग, ट्रेकिंग, साइकिल रैली, डैजर्ट सफारी आदि साहसिक व रोमांचक गतिविधियाँ समय-समय पर आयोजित करती है जो कैडेट्स को रोमांच की भावना से भरपूर कर देती हैं और अन्ततः उनके ज्ञान, अनुभव में वृद्धि के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व को निखारने में भी मददगार सिद्ध होती हैं। इसी प्रकार प्रशिक्षण शिविरों में विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएं कैडेट्स में खेल-भावना (Sportsmanship) का विकास करती हैं। इस प्रकार खेल व रोमांचक गतिविधियाँ कैडेट्स में जोखिम लेने की क्षमता को बढ़ाती है। यह जोखिम - क्षमता युवा कैडेट्स को नेतृत्व कौशल के भी अनेक पाठ सिखाती है।

कुल मिलाकर एन.सी.सी. संगठन अपनी हर गतिविधि चाहे वह संस्थागत ट्रेनिंग के दौरान हो या कैम्प ट्रेनिंग के दौरान, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में युवा कैडेट्स के व्यक्तित्व विकास में अपना योगदान निःसंदेह देता है। एन.सी.सी. के पाठ्यक्रम की संरचना ही इस प्रकार की है कि यह कैडेट्स को इस संगठन के ध्येय व लक्ष्यों की ओर अग्रसर करता है जिसमें नेतृत्व कौशल भी सम्मिलित है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के उन शब्दों से इस आलेख का समापन करना समीचीन होगा जो उन्होंने 28 जनवरी 2019 की एन.सी.सी. रैली, दिल्ली में नव भारत के विकास के लिए कैडेट्स के व्यक्तित्व की अपार क्षमता पर

विश्वास जताते हुए कहे थे कि – “ जोश और अनुशासन के जो दिन आप आज जी रहे हैं, मुझे भी उन क्षणों को जीने का अवसर मिला है। एक कैडेट के तौर पर बिताए गए वो दिन आज तक मेरे संकल्प को, मेरी प्रेरणा को ऊर्जा दे रहे हैं।”⁸ स्पष्टतः भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री इस तथ्य की पुष्टि ही कर रहे हैं कि एनसीसी एक संगठन के रूप में युवाओं के नेतृत्व कौशल विकास में अपना भरपूर योगदान देता है।

संदर्भ

¹ <https://nccauto.gov.in/prominentalumni?cat=6>

² <https://indiancc.nic.in/>

³ <https://indiancc.nic.in/>

⁴ <https://indiancc.nic.in/>

⁵ खेड़ा; शिव; *जीत आपकी*: Bloomsbury Publishing India Pvt Ltd; नई दिल्ली (2014) अध्याय 1 व 2.

⁶ अभय; डॉ. मनोहर; *श्रीमद्भगवद्गीता*; नीता प्रकाशन; नई दिल्ली (संस्करण, 2012) प्रस्तावना।

⁷ वही, पृ० 34

⁸ https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pm-addresses-the-ncc-rally/